

संस्कृत - सम् + क + क्त

(सुट का आगम)

'संस्कृत' शब्द का अर्थ है - शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, परिनिष्ठित।

अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है - शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा

व्याकरण → वि + आङ् + √कृ + ल्युट्

जिसके माध्यम से शब्दों की व्युत्पत्ति या निष्पत्ति बताई जाए, वह व्याकरण है।

व्याकरण 'शब्दशास्त्र' या 'पदशास्त्र' है।

त्रिमुनि → संस्कृत व्याकरण के त्रिमुनि हैं -

① पाणिनि ② कात्यायन / वररुचि ③ पतञ्जलि



अष्टाध्यायी → अष्टाध्यायी व्याकरणशास्त्र का महत्वपूर्ण ग्रंथ है - अष्टाध्यायी महर्षि पाणिनि की रचना है। अष्टाध्यायी में 8 अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद हैं, तो कुल मिलाकर $8 \times 4 = 32$ पाद हैं, तथा 3978 अर्थात् लगभग 4000 सूत्र हैं। इसीलिए पाणिनि को 'सूत्रकार' कहा गया है।

→ अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र 'वृद्धिरादैच (1.1.1)' तथा अन्तिम सूत्र 'अ अ' (8.4.67) है।

वृद्धिरादैच (1.1.1)

अध्याय पाद सूत्र

पहले अध्याय के पहले पाद का पहला सूत्र।

{ पहला अंक अध्याय को, दूसरा अंक पाद को तथा तीसरा अंक सूत्र की संख्या को बताता है। }

⇒ सहर्षि कात्यायन या वररुचि ने अष्टाध्यायी के 2 सूत्रों पर 'वार्तिक' लिखा, इसीलिए इन्हें 'वार्तिककार' कहते हैं।

⇒ सहर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी के 4000 सूत्रों पर एक विस्तृत भाष्य लिखा, जिसे 'महाभाष्य' कहते हैं। इसीलिए व्याकरणशास्त्र के 'भाष्यकार' के रूप में पतञ्जलि प्रसिद्ध हैं।

महाभाष्य में कुल 84 'आह्निक' हैं।



संस्कृत वर्ण परिचय

वर्ण अथवा अक्षर → हम मुख से जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें

'वर्ण' अथवा 'अक्षर' कहते हैं।

जिनका क्षरण या विनाश न हो वे अक्षर हैं।

जैसे - अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ, आदि।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं → ① स्वर ② व्यंजन

स्वर (अच्)

स्वर - 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः'

स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती। जैसे - 'अ' के उच्चारण में किसी अन्य स्वर या व्यंजन वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती, इसीलिए 'अ' स्वर है।

⇒ अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ, आ

⇒ व्याकरण शास्त्र में स्वरों की संख्या 9 मानी गई है। ये सभी स्वर 'अच्' प्रत्यहार के अन्तर्गत सम्मिलित हैं, इसीलिए स्वरों को 'अच्' भी कहते हैं।

मूल स्वर → मूल स्वर 5 हैं। अ, इ, उ, ऋ, ए
ये पाँच मूल स्वर हैं।

संयुक्त स्वर → ए, ओ, ऐ, औ - ये 4 संयुक्त या
मिश्रित स्वर कहे जाते हैं।

जैसे →
 $अ + इ = ए$
 $अ + उ = ओ$
 $अ + ए = ऐ$
 $अ + औ = औ$



स्वर के भेद → स्वरों के मुख्यतया तीन भेद हैं:-

1. ह्रस्व स्वर → जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा
का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।

जैसे → अ, इ, उ, ऋ, ए ये सभी ह्रस्व स्वर हैं।

2. दीर्घ स्वर → जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा
का समय लगे, वे दीर्घस्वर कहे जाते
हैं।

जैसे → आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ।

3. प्लुत स्वर → जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा
से अधिक अर्थात् तीन मात्रा का समय
लगे, प्लुत स्वर कहते हैं।

प्लुत स्वरों की पहचान के लिए '३'
चिह्न लगाया जाता है।

जैसे → अ-३, इ-३, उ-३ आदि

'ओउम्' - यह स्वर त्रैमात्रिक है, जिसका प्रयोग
ग्राम: वेदों में होता है। यहां 'ओ'
प्लुत स्वर है।

ह्रस्व स्वर की एक मात्रा, दीर्घ स्वर की दो मात्रा एवं प्लुत स्वरों को त्रिमात्रिक समझना चाहिये। व्यंजन वर्णों की आधी मात्रा जाननी चाहिये।

एकमात्रिक स्वर - अ, इ, उ, ऋ, ॠ (ह्रस्व स्वर)

द्विमात्रिक स्वर - आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ (दीर्घ स्वर)

त्रिमात्रिक स्वर - अ-३, इ-३, उ-३, ऋ-३ आदि (प्लुत स्वर)

अर्धमात्रिक वर्ण - क् ख् ग् घ् ङ् च् (सभी व्यञ्जन)

मात्राकाल → पलक इनपकने के समय को एकमात्रा काल कहते हैं।

व्यञ्जन (हल् वर्ण)

व्यंजन वे वर्ण हैं, जो स्वतंत्र रूप से न बोले जा सकें, अपितु जिनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता।

जैसे → क् + अ = क

ख् + अ = ख

ग् + अ = ग आदि



व्याकरण में जो शुद्ध व्यंजन वर्ण होते हैं, उन्हें हलन्त के साथ ही लिखा जाता है। जैसे → क्, च्, ट्, त्, प् आदि। इसलिये इन्हें अर्धमात्रिक वर्ण कहा गया है।

सभी व्यंजन (व्यञ्जन) वर्ण 'हल्' प्रत्याहार में समाहित होते हैं। अतः व्यंजनों को 'हल्' भी कहते हैं। कुल व्यञ्जन वर्ण 33 माने गये हैं। जो कि माहेश्वर सूत्रों के

'हयबरट' से लेकर 'हल' तक 10 स्त्रोतों में कहे गए हैं।

5

व्यञ्जन के प्रकार

मुख्य रूप से व्यञ्जन के तीन प्रकार होते हैं, जो माहेश्वर स्त्रोतों में गिने गए हैं -

(i) स्पर्श व्यञ्जन (ii) अन्तःस्थ व्यञ्जन (iii) ऊष्म व्यञ्जन चतुर्थ प्रकार है (4)। संयुक्त व्यञ्जन (जो माहेश्वर स्त्रोतों में परिगणित नहीं है)

(i) स्पर्श व्यञ्जन → जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों (भागों) का स्पर्श

होता है, उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इनकी संख्या 25 होती है। 'क' से लेकर 'म' तक के वर्ण स्पर्श व्यञ्जन हैं।

(ii) अन्तःस्थ व्यञ्जन → 'यणोऽन्तःस्थाः' यण प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले य् व् र् ल्

ये चार वर्ण अन्तःस्थ व्यञ्जन कहे जाते हैं।

(iii) ऊष्म व्यञ्जन → 'शल ऊष्माणः' शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित श् स् ह् ष् ये चार वर्ण ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं।

(iv) मिश्रित या संयुक्त व्यञ्जन → दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो वर्ण बनते हैं, उन्हें संयुक्त या मिश्रित व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे -

क् + ष + अ = क्ष

त् + र + अ = त्र

ज् + ञ् + अ = ज्ञ

अयोगवाह → वर्णमाला में पड़े हुए वर्णों के अतिरिक्त चार वर्ण और भी हैं -

(i) अनुस्वार (ं) (ii) विसर्ग (:) (iii) जिह्वामूलीय

(iv) उपध्मानीय (५ प, ५ फ) ५ क, ५ ख (५)



व्यंजन (33 वर्ण)

6

स्पर्श

अन्तःस्थ (गण)

संयुक्त व्यंजन

क वर्ग -	क	ख	ग	घ	ङ
च वर्ग -	च	छ	ज	झ	ञ
ट वर्ग -	ट	ठ	ड	ढ	ण
त वर्ग -	त	थ	द	ध	न
प वर्ग -	प	फ	ब	भ	म

म र ल व

क्ष त्र क्ष भ्र

ऊष्म (शल्)

श स ष ह



स्वर

ह्रस्व स्वर

दीर्घ स्वर

प्लुत स्वर

अ, इ, उ, ऋ, ए

आ, ई
ऊ, ॠ
रु, ओ
रे, औ

अ-३ उ-३ ऋ-३

⇒ प्लुत स्वरों की पहचान के लिए '३' यह चिह्न लगाया जाता है।

ध्वनिधों के उच्चारण स्थान → जिस वर्ण का उच्चारण मुख के जिस भाग से होता है उसे उस ध्वनि या वर्णों का उच्चारण स्थान कहा जाता है।

स्वर	व्यंजन	स्थान	नाम
अ	क ख ग घ ङ ह	कंठ	कंठ्य
इ	च छ ज झ ञ श	तालु	तालव्य
ऋ	ट ठ ड ढ ण र ष ड़ ढ़	मूर्ध्नि	मूर्धन्य
उ	त थ द ध न ल स	दोत	दन्त्य
रु	प फ ब भ म	होठ	ओष्ठ्य
ओ	-	कंठतालु	कंठतालव्य
-	व	कंठहोष्ठ	कंठओष्ठ्य
-	-	दोत-होठ	दन्तओष्ठ्य

⇒ (-) अनुस्वार का उच्चारण स्थान 'नासिका' है।

⇒ (:) विसर्ग का उच्चारण स्थान 'कंठ' है।
(कण्ठ)

संस्कृत भाषा में वर्ण दो प्रकार के होते हैं - स्वर व व्यञ्जन
- इन्हें क्रमशः अच् और हल् भी कहते हैं -

अ इ उ ऋ लृ — ह्रस्व } साधारण स्वर
आ ई ऊ ऋ — दीर्घ }
ए ऐ ओ औ — दीर्घ — संयुक्त स्वर

व्यञ्जन

क ख ग घ ङ = क वर्ग
च छ ज झ ञ = च वर्ग
ट ठ ड ढ ण = ट वर्ग
त थ द ध न = त वर्ग
प फ ब भ म = प वर्ग
य र ल व — अन्तःस्थ वर्ण
श ष स ह — ऊष्म वर्ण

क् + ष = क्ष
त् + र = त्र
ज् + झ = ज्ञ
श् + र = श्र

संयुक्ताक्षर



उपर्युक्त सभी व्यञ्जन वर्णों में 'अ' का संयोग है।
अ के बिना इनका स्वरूप होगा - क्, ख्, ग्, घ्
इत्यादि। इस रूप को 'हल्' कहा जाता है तथा इसका
संकेतक चिह्न (.) है।

वाक्य में वर्णों के अतिरिक्त कुछ अन्य ध्वनि
प्रतीकों का भी उपयोग किया जाता है जो वर्णमाला में
सम्मिलित न होते हुए भी अर्थबोध में सहायक होते हैं।
इन्हें अयोगवाह कहा जाता है। ये निम्न हैं -

चन्द्री अनुस्वार अं (.)
(आगत ध्वनि) विसर्ग अः (:) } - अयोगवाह
अँ (ँ) चन्द्रविन्दु अँ (ँ)

जिन वर्णों का उच्चारण मुख और नासिका के सहयोग से किया जाता है, उन्हें 'अनुनासिक' कहते हैं।

* ड, ञ, ण, न और म अनुनासिक वर्ण हैं।

* सभी स्वर दो प्रकार के होते हैं -- अनुनासिक और निरनुनासिक

वर्णों का उच्चारण स्थान



अ	आ	क	ख	ग	घ	ङ	च	विसर्ग (:)	→ कण्ठ
इ	ई	च	छ	ज	झ	ञ	श		→ तालु
ऋ	ॠ	ट	ठ	ड	ढ	ण	र		→ मूर्धा
लृ	लृ	थ	द	ध	न	ल	स		→ दन्त
उ	ऊ	प	फ	ब	भ	म			→ ओष्ठ

उपरोक्त पेज
वर्तिका - 6 के
अनुसार है

रु } कण्ठतालु
रे }
ओ } कण्ठोष्ठ
औ }
व } दन्तोष्ठ

म्
↓
ओष्ठ + नासिका

५ क जिह्वामूलीय
५ ख

⇒ ड, ञ, ण, न और म का उच्चारण स्थान
स्ववर्गीय + नासिका है।

⇒ कंठ और तालु दोनों के योग से उच्चरित ध्वनि
को कंठतालु ध्वनि कहते हैं।

⇒ कंठ और ओष्ठ दोनों के योग से उच्चरित ध्वनि
को कंठओष्ठम ध्वनि कहते हैं।

⇒ जिस ध्वनि का उच्चारण दाँतो और होठों दोनों
की सहायता से किया जाता है, उसे 'दन्तोष्ठ्य'
ध्वनि कहते हैं।

वर्णों के उच्चारण में वक्ता को जो प्रयास करना पड़ता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है -

1- आन्तरिक प्रयत्न 2- बाह्य प्रयत्न

1- आन्तरिक प्रयत्न → ध्वनि निकलने से पहले मुख में जो चेष्टा होती है उसे आन्तरिक प्रयत्न कहते हैं।

यह पाँच (5) प्रकार का होता है -

(1) स्पृष्ट → इसमें जिह्वा उच्चारण स्थानों का स्पर्श करती है। इसके अन्तर्गत वर्णों के पाँचो वर्ग आते हैं। इन्हें स्पर्श वर्ण भी कहते हैं। जैसे - क च ट त प वर्ग।

(2) ईषत - स्पृष्ट → इसमें जिह्वा उच्चारण स्थानों का थोड़ा स्पर्श करती है। जैसे - य व र ल।

(3) विवृत - इसके उच्चारण में मुँह खोलना (विवृत करना) पड़ता है। इसके अन्तर्गत सभी स्वर और लृ आते हैं।

(4) ईषत विवृत - इसमें जिह्वा को थोड़ा उठाना पड़ता है, जैसे - श ष स ह आते हैं।

(5) संवृत - इसके उच्चारण में वायु का मार्ग मुख के अंदर बंद रहता है। जैसे - अ इ ध्वनि आता है।

2- बाह्य प्रयत्न - मुख से वर्ण निकालते समय जो चेष्टा होती है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके 11 प्रकार हैं -

1- विवार 2- संवार 3- श्वास 4- नाद 5- अघोष 6- सघोष

7- अल्पप्राण 8- महाप्राण 9- उदान्न 10- अनुदान्न 11- स्वरित

10
1- विवार → इसमें स्वर तंत्रिया पूर्णतः खुली होती हैं,
जैसे - क च ट त प वर्ग का पहला अक्षर
आता है।

2- संवार → इसमें स्वर तंत्रिया पूर्णतः बन्द रहती हैं।
इसमें वर्ग का तृतीय अक्षर आता है,
जैसे - ग ज द व आदि।

3- श्वास → इसमें ध्वनियों का उच्चारण बिना किसी
बाधा के होता है। जैसे - ध फ ठ आदि।

4- नाद → इसमें स्वर तंत्रियों में कम्पन होता है।
जैसे - म ण न

5- अघोष → स्वर तंत्रिया रुक इसरे से अलग प्रथम
द्वितीय और श ष स।

6- सघोष → स्वर तंत्रिया रुक इसरे के नजदीक होती हैं
तथा कम्पन होती हैं। वर्ग का तृतीय, चतुर्थ,
पंचम घ व र ल ह।

7- अल्प प्राण → इसमें प्राणवायु की मात्रा न्यून होती है,
ऐसे वर्गों को अल्पप्राण ध्वनि कहते हैं।



जैसे - वर्ग का पहला, तृतीय और पंचम
(क ग ड , च ज ञ , प व म ,
य व र आदि)

8- महाप्राण → ध्वनियों के उच्चारण में श्वास अधिक मात्रा
में प्रयोग होता है, उन्हें महाप्राण वर्ग कहते हैं।
जैसे - वर्ग का द्वितीय, चतुर्थ और श ष
स् ह।

9- 10- 11- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित → इसमें रुक
मात्रा (अ इ उ ऋ लृ) द्वितीय मात्रा (ओ ई
ऊ ऋ ए ऐ ओ औ) और तीन मात्रा (ओइम/
हे राम) का समय लगता है। इसको ह्रस्व, दीर्घ

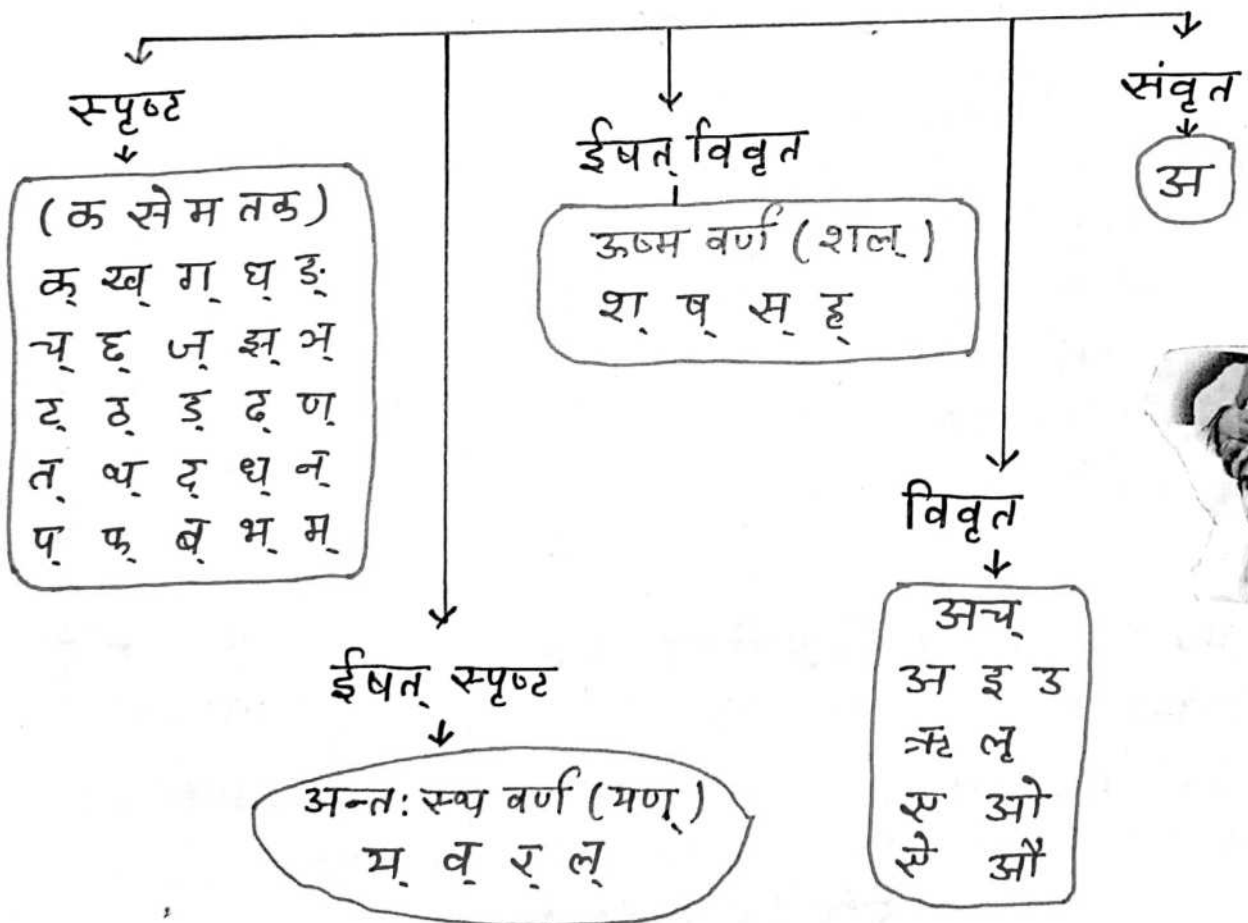
और प्लुत स्वर कहते हैं।


- जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।
- जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय (दो मात्रा का) लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।
- जब इतना स्थित किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए जोर से स्त्रीचक्र स्वरों का उच्चारण होता है तो ऐसे स्वर को प्लुत स्वर कहते हैं।

ह्रस्व स्वर → अ, इ, उ, ऋ, ए

दीर्घ स्वर → आ, ई, ऊ, ऐ, औ

आव्यन्तर प्रयत्न तालिका



विवार श्वास अधोष	संवार नाद घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
खर् क ख च छ ट ठ त थ प फ श ष स	हश् ग घ ङ ज झ ञ ड ढ ण द ध न ब भ म य व र ल	वर्गों के प्रथम तृतीय और पञ्चम वर्ण और मज् क ग ङ च ज ञ ट ड ण त द न प ब म य व र ल	वर्गों के द्वितीय चतुर्थ और शल ख ङ घ ह ङ झ ठ ठ थ ध क अ श स ष ह	अ इ उ ऋ ॠ ए ओ ऐ औ 

— × —

DEEPAK SINGH RAJPOOT

भगवान् माहेश्वर (शिव) के डमरु से उत्पन्न होने के कारण इन्हें "माहेश्वर सूत्र" कहा जाता है।

- ⇒ अइउण् ऋलृक् आदि में 14 सूत्र हैं इसलिए इन्हें "चतुर्दशसूत्र" कहा गया है।
- ⇒ इन्हीं सूत्रों से प्रत्याहार बनाये जाते हैं; अतः इन्हें "प्रत्याहार सूत्र" भी कहते हैं।
- ⇒ भगवान् शिव के डमरु से निकलकर पाणिनि की प्राप्ति हुई, अतः इन्हें "शिवसूत्र" या "माहेश्वर सूत्र" भी कहते हैं।
- ⇒ इन सूत्रों में संस्कृत वर्णमाला है अतः इन्हें 'वर्णसमाम्नायसूत्र' भी कहते हैं।

चतुर्दश माहेश्वर सूत्र



ज्ञातव्य तथ्य

- ① अइउण्
- ② ऋलृक्
- ③ रुओङ्
- ④ ऐऔच्
- ⑤ हयवरट्
- ⑥ लण्
- ⑦ अमङ्गणनम्
- ⑧ झमञ्
- ⑨ चढधष्
- ⑩ जवगाडदश्
- ⑪ यफछठथचटतव्
- ⑫ कपय्
- ⑬ शषसर्
- ⑭ हल्

- ⇒ माहेश्वर सूत्रों में सबसे पहले स्वर हैं, उसके बाद अन्तःस्थ वर्ण य् र् ल् व् हैं। उसके बाद वर्णों के पञ्चम वर्ण, फिर चतुर्थ वर्ण, उसके बाद तृतीय वर्ण फिर द्वितीय वर्ण तब प्रथम वर्ण, सबसे अन्त में श् स् ष् ह् ये चार ऊष्म वर्ण हैं।
- ⇒ इन चतुर्दशसूत्रों के अन्त में जो ण् क् इच् आदि व्यञ्जन वर्ण हलन्त हैं, उनका नाम 'इत' है। इन इत्संज्ञक वर्णों का लोप हो जाता है। कुल 14 इत्संज्ञक वर्ण होते हैं।
- 'इत' को 'अनुबन्ध' भी कहा जाता है। अर्थात् 'इत' और अनुबन्ध पर्यायवाची हैं।

⇒ प्रत्याहार बनाने में इत्संज्ञक वर्णों का प्रयोग किया जाता है किन्तु प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों को नहीं गिना जाता है।

जैसे - 'अच' प्रत्याहार " अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ " ये 9 वर्ण आते हैं। जिसमें इत्संज्ञक वर्ण नहीं गिने गये हैं।

⇒ माहेश्वर सूत्रों के पाँचवें सूत्र 'इयवरट्' में 'ह' वर्ण गिना गया है तथा चौदहवें सूत्र 'टल' में भी 'ह' वर्ण गिना गया है। अतः हकार की दो बार गणना की गयी है।

⇒ माहेश्वर सूत्रों में 'ण्' इत्संज्ञक वर्ण दो बार आया है - एक बार अइउण् में दूसरी बार लण् में।

— × —



DEEPAK SINGH RAJPOOT

उद्देश्य

- ① छात्रों में नवीन शब्द निर्माण की क्षमता उत्पन्न करना।
- ② छात्रों को व्याकरण की सहायता से शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा को व्यवहार में लाने के लिए समर्थ बनाना।
- ③ शुद्ध एवं अशुद्ध का युक्तिसंगत विवेचन करने की क्षमता उत्पन्न करना।
- ④ छात्रों को प्रमुख संधि का ज्ञान तथा उनके प्रयोग से शुद्ध नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता विकसित करना।
- ⑤ नवनिर्मित शब्दों की शुद्धता का ज्ञान रखते हुए उसका सही वाक्य प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना।
- ⑥ सन्धि-विच्छेद से शब्दों के शुद्ध उच्चारण कर सकने की क्षमता का विकास करना।

सन्धि

⇒ सम + √था + कि = सन्धिः (पुँल्लिङ्गः)

⇒ सन्धि शब्द का अर्थ है - मेल या योग अर्थात् मिलना

⇒ दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है उसे 'सन्धि' कहते हैं।

जैसे → रमा + ईश : = रमेशः

सन्धि विच्छेद → संधियुक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही सन्धि विच्छेद है।

सन्धि → मिलना विच्छेद → अलग करना

⇒ गणेश का सन्धि विच्छेद होगा = गण + ईशः।

⇒ सन्धि के मुख्य रूप से तीन भेद हैं-

① अच् सन्धि या स्वर सन्धि

③ विसर्ग सन्धि

② हल् सन्धि या व्यञ्जन सन्धि

